4

नये नियम में स्त्रियां

क्रूस के बाद, नवजात कलीसिया में हमें महान स्त्रियां मिलती हैं। नया युग अर्थात मसीही युग, जिसका आरम्भ यीशु की मृत्यु से हुआ था (इब्रानियों 9:16, 17), यीशु की मृत देह के प्रति सम्मान के लिए ये स्त्रियां जो कुछ भी कर सकती थीं, करने से हुआ, जबकि उसके निकटतम पुरुष अनुयायी जान बचाने के लिए छिप गए थे।

> और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आई थीं, पीछे-पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उसकी लोथ किस रीति से रखी गई है।
>
> और लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया: और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया।
>
> परन्तु सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आईं (लूका 23:55-24:1)

स्त्रियां और पुनरुत्थान

यहूदी अगुओं का क्रोध यीशु के पीछे चलने वाली स्त्रियों को डरा नहीं पाया। क्रूस पर उसे पीड़ा से बिलखते और उसकी देह में से प्राण निकलते हुए वे उसे देखती रहीं (मत्ती 27:55, 56; मरकुस 15:40, 41)। अरिमतिया के यूसुफ और नीकुदेमुस की तरह (लूका 23:55), उसके पुरुष चेले नहीं, बल्कि वे उसके पीछे-पीछे जाकर उसे देखती रही थीं। फिर वे उसकी देह के लिए मसाले और सुगन्धित वस्तुएं तैयार करने के लिए यरूशलेम लौट गई थीं (लूका 23:56)।

रविवार सुबह-सुबह, शायद जब पुरुष अभी सोए हुए थे, स्त्रियां वे मसाले क्रब पर ले जा रही थीं, जो उन्होंने यीशु की देह का अभिषेक करने के लिए बड़े प्रेम से तैयार किए थे (मत्ती 28:1)। उन्होंने विचार तो किया होगा कि उन्हें कब्र की पहरेदारी कर रहे सिपाही रोकेंगे, परन्तु बिना यह जाने कि क्या होगा, बहादुरी से निकल पड़ीं। वे चकित रह गईं क्योंकि सिपाही वहां नहीं थे; वह पत्थर भी हट गया था और कब्र भी खाली थी (लूका 24:1-3)।

जी उठने के बाद यीशु पुरुषों को नहीं, बल्कि पूर्व पापिन मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया था (यूहन्ना 20:11-18)। उसके जी उठने की घोषणा करने वाली सबसे पहली स्त्रियां ही थीं (लूका 24:9), परन्तु यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि लोगों में यह संदेश ले जाने वाली सबसे पहली वे नहीं थीं। स्पष्टतया उन्होंने उन ग्यारह को छिपने के स्थान से ढूंढ़ लिया, जो भीड़ से और समाज से दूर थे, और उन्हें यीशु के जी उठने की खबर

दी। पिन्तेकुस्त के दिन लोगों में जी उठने की बात बताने वाला सबसे पहला व्यक्ति पतरस था (प्रेरितों 2:29-32; देखें लूका 24:44-47)। तौ भी इस बड़ी घटना की घोषणा सबसे पहले करने की आशीष स्त्रियों को ही दी गई थी, जो यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान तन-मन से प्रेम पूर्वक सेवा करती थीं।

संसार को यीशु के मारे जाने, गाड़े जाने और जी उठने की कहानी स्त्रियों के नहीं, पुरुषों के कार्यों से बताई गई। इस कहानी में उसके वचन का प्रकाशन, घोषणा और सम्भाल कर रखने का ढंग अपनाया गया। नये नियम में स्त्रियों की बातें हैं, परन्तु इसमें स्त्रियों द्वारा जनसभा में कही या उनके द्वारा लिखी एक भी बात नहीं है। यीशु ने प्रेरितों के रूप में अपने व्यक्तिगत प्रतिनिधि पुरुषों को चुना। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए अन्य लोगों के साथ उन्होंने नया नियम लिखा। इन लेखों में पाई जाने वाली सच्चाइयां वह आधार हैं, जिन पर कलीसिया बनी है (इफिसियों 2:20)। सुसमाचार का फैलाव यीशु की मृत्यु से सम्भव हुए उद्धार के संदेश को सारे संसार में जाकर लोगों को सुनाने से हुआ। मतलब यह नहीं कि स्त्रियां सिखाती नहीं थीं; मतलब यह है कि जो लिखा गया है, उससे हमें निष्कर्ष निकालना होगा कि सब लोगों में वचन पुरुषों द्वारा ही बताया गया था।

पुराने नियम की तरह, नये नियम में भी अधिकतर मामलों में लोगों के समूह का अनुमान लगाने के लिए केवल पुरुषों को शामिल किया जाता था (मत्ती 14:21; 15:38; प्रेरितों 4:4)। जब मेज़ की सेवा करने के लिए लोगों की आवश्यकता पड़ी, तो पुरुषों को यह ज़िम्मेदारी दी गई (प्रेरितों 6:3)। अन्यजातियों के लिए उद्धार का मार्ग कुरनेलियुस के द्वारा खुला, जो एक पुरुष था (प्रेरितों 10; 11)। अंताकिया की कलीसिया के भविष्यवक्ता और शिक्षक पुरुष ही थे; उन्हीं के द्वारा पवित्र आत्मा ने प्रकट किया कि बरनबास और पौलुस मियान क्षेत्र में जाने को थे (प्रेरितों 13:1, 2)।

स्त्रियां और कलीसिया के काम

स्त्रियों को कलीसिया के काम के बिना रखा गया। दोरकास प्रभु की एक महान सेविका थी, जो सिलाई करने के अपने कौशल का इस्तेमाल विधवाओं के लिए कपड़े सिलकर करती थी (प्रेरितों 9:39)। यूहन्ना मरकुस की माता मरियम ने प्रार्थना के लिए इकट्ठा होने को अपना घर दे दिया (प्रेरितों 12:12)। प्रार्थना में कौन-कौन आता था या प्रार्थना कैसे की जाती थी, यह नहीं बताया गया है। एक धार्मिक व्यापारी स्त्री लुदिया, जिसने सुसमाचार को माना था, पौलुस और उसके साथियों के फिलिप्पी में रहने के समय, अपने घर में जगह देकर आतिथ्य के अपने मन को दिखाया था (प्रेरितों 16:15)। उसके घर का इस्तेमाल शायद कलीसिया के इकट्ठा होने के लिए किया जाता था (प्रेरितों 16:40)।

स्त्रियां और दूसरों को सिखाना

भक्त स्त्री प्रिसकिल्ला विशेष रुचि का कारण है। अपने पति अक्किला के साथ वह तम्बू बनाया करती थी (प्रेरितों 18:2, 3)। हम यह बताने की स्थिति में नहीं हैं कि तम्बू

बनाने के इस काम में वह क्या करती थी, परतु हमें यह बताया गया है कि अपने पति के साथ मिलकर उसने अपुल्लोस को वचन सिखाया।

यह निष्कर्ष हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के अन्य मामलों को देखकर निकाल सकते हैं। आमतौर पर लूका ने पहले पति, जिन्हें वह ज़ोर देकर कहना चाहता हो, जो प्रसिद्ध हों, या जो उस काम में पूरी तरह लगे हों, उनका नाम पहले दिया। इन पर ध्यान दें: (1) पतरस का नाम प्रेरितों की सूची में सबसे पहले मिलता है; अन्यों का नाम उनके महत्व के क्रम अनुसार ढलते क्रम में है (प्रेरितों 1:13)। (2) पतरस, जिसके काम उस अवसर पर विशेष दिलचस्पी का कारण थे, प्रेरितों 3:1, 3, 4, 11 में यूहन्ना से पहले दिया गया है। उसका नाम लूका के वृत्तांत में पहले मिलना जारी रहता है (प्रेरितों 4:13; 5:29; 8:14)। (3) हनन्याह, जो पति था, का नाम अपनी पत्नी सफीरा से पहले आता है (प्रेरितों 5:1)। (4) प्रेरितों 6:5 में, स्तिफनुस जिसकी सेवकाई पर लूका की अगली चर्चा में रोशनी डाली जानी थी, का नाम पहले दिया गया है; उसके बाद फिलिप्पुस, फिर विधवाओं की सेवा के लिए चुने गए सात लोगों में से शेष का नाम है। (5) मिशनरी यात्रा के आरम्भ में बरनबास प्रमुख था; प्रेरितों 13:1, 2, 7 में उसका नाम पौलुस से पहले आया है। बाद में हम सीखते हैं कि पौलुस के मुख्य वक्ता बनने पर उसका नाम पहले दिया जाने लगा (प्रेरितों 13:42, 46, 50)। यह पढ़ने पर कि लुस्त्रा के लोगों ने निष्कर्ष निकाला कि बरनबास प्रधान देवता, ज्यूस है, उसका नाम पहले मिलता है (प्रेरितों 14:12, 14)। प्रेरितों 15:2 में पौलुस का नाम पहले है, जहां भाइयों ने उसे बरनबास के साथ यरूशलेम भेजने का निश्चय किया। प्रेरितों और प्राचीनों की सभा में, पहले बरनबास का नाम मिलता है, जिसे वे पौलुस से अधिक पहचानते थे (प्रेरितों 15:12, 25)। समय बीतने के साथ, बरनबास के साथ मिशनरी कार्य में पौलुस की पहचान प्रवक्ता के रूप में हो गई। प्रेरितों 15:22, 35 में उसका नाम पहले मिलता है। (6) पौलुस का नाम सीलास से पहले ही आता है (प्रेरितों 16:19, 25, 29; 17:4, 10)। (7) सीलास का नाम जवान तीमुथियुस से हमेशा पहले मिलता है (प्रेरितों 17:14, 15; 18:5)।

यदि ऊपर दिए तथ्यों का इस्तेमाल मानक के रूप में किया जा सकता है तो हमारे पास आधार है, जिससे हम और प्रिसिकल्ला के काम पर विचार कर सकते हैं। लूका ने उनका परिचय अविवल्ला का नाम पहले देकर कराया, जो कि उसके पुरुष और पति होने के कारण स्वाभाविक था (प्रेरितों 18:2)। बाद में प्रिस्किल्ला का नाम पहले दिया गया मिलता है (प्रेरितों 18:18), जिससे यह सुझाव मिल सकता है कि कलीसिया में अपने पति से अधिक उसे लोग जानते थे। आज कलीसिया में पत्नियां आमतौर पर अपने पतियों से अधिक काम करती हैं। यह तथ्य कि सिखाने की स्थिति में प्रिस्किल्ला का नाम पहले है (प्रेरितों 18:26) यह संकेत देता प्रतीत होता है कि अपुलोस को समझाने में वह सक्रिय थी न कि केवल पास बैठी थी। हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि चर्चा में उसका योगदान प्रमुख था, परन्तु हमारे पास यह विश्वास करने का कारण उसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कम से कम इतना तो हमें पता है कि वह सिखाने के कार्य में शामिल थी, क्योंकि

प्रेरितों 18:26 कहता है, ''*पर जब प्रिसिकल्ला* और अक्विल्ला ने उसकी बातें सुनीं तो *वे* उसे एक ओर ले गए ओर परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक-ठीक बताया।'' इस मामले में यूनानी क्रियाएं ''ले गए'' और ''बताया'' बहुवचन में हैं, जिसका अर्थ यह है कि दोनों ने काम किया।

प्रिसिकल्ला ने लोगों में वचन नहीं सुनाया, पुरुषों पर प्रभुता नहीं की, चर्चा को अपने हाथ में नहीं लिया, या यहां लीडर नहीं बनी। लूका ने अवश्य बताना चाहा होगा कि उसने अलग ले जाकर एकांत में अपुल्लोस को परमेश्वर का वचन सिखाने में भाग लिया (प्रेरितों 18:26)। यदि कोई यह दिखाए कि अपुल्लोस को वचन बताने में प्रिस्किल्ला ने अगुआई की, तौ भी इससे यह सुझाव नहीं मिलता कि स्त्रियों को आराधना में बोलने की अनुमति थी। इस घटना से निजी होने का संकेत मिलता है।

स्त्रियां और दूसरों को समर्थन

नया नियम उन स्त्रियों की सूची देता है, जो यीशु की निजी सेवकाई के समय उसकी और प्रेरितों की सेवा करती थीं (लूका 8:1-3; मरकुस 15:40, 41)। यद्यपि यीशु ने स्त्रियों को सिखाने के लिए नहीं भेजा, या उन्हें अपने साथ और प्रेरितों के साथ सिखाने की अनुमति नहीं दी, परन्तु किसी ने उस पर पूर्वाग्रही होने का आरोप नहीं लगाया। दूसरी ओर, कइयों ने पौलुस पर स्त्री विरोधी होने या स्त्रियों के विरुद्ध पूर्वाग्रही होने का आरोप लगाया, चाहे यीशु के लिए उसकी सेवकाई में उसके साथ कई स्त्रियां सेवा करती थीं।

पौलुस के हमसफर, जिनका लूका ने नाम दिया है, बरनबास, यूहन्ना और मरकुस (प्रेरितों 13:2-5), सीलास (प्रेरितों 15:40), तीमुथियुस (प्रेरितों 16:1-3), अक्विल्ला (प्रेरितों 18:18), इरास्तुस (प्रेरितों 19:22), सोपत्रुस, अरिस्तर्खुस, सिकुन्दुस, गयुस, तुखिकुस और त्रुफिनुस (प्रेरितों 20:4) सब पुरुष ही थे। पुरुषों की इस सूची में एकमात्र अपवाद प्रिस्किल्ला का है (प्रेरितों 18:18)। यदि हम केवल उसी पर विचार करें जो लूका ने लिखा है तो हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि पौलुस ने अपने साथ पुरुषों को ही लिया, प्रिस्किल्ला को साथ चलने की अनुमति इसलिए मिली क्योंकि उसका पति उसके साथ था।

परन्तु पौलुस के लेखों को नज़दीक से देखने पर पता चलता है कि उसकी मिशनरी यात्राओं में स्त्रियों ने उसकी सहायता की थी और उसका साथ दिया था। उन्होंने उसकी सहायता किस तरह से की, उसका शायद हम अनुमान ही लगा सकते हैं। अनुमान लगाते हुए हमें यह मानना आवश्यक है कि उन्होंने पौलुस की शिक्षाओं के विपरीत कोई काम नहीं किया होगा।

अक्विल्ला के साथ प्रिस्किल्ला ने पौलुस के लिए अपने प्राण दांव पर लगा दिए (रोमियों 16:4)। मरियम (रोमियों 16:6), यूनियास (रोमियों 16:7; कुछ लोग सवाल उठाते हैं कि स्त्री थी भी या नहीं), त्रूफेना, त्रूफोसा, पिरसिस (रोमियों 16:12), यूलिया (रोमियों 16:15), नेर्युस की बहन (रोमियों 16:15) और रोम में रहने वाली अन्य स्त्रियों ने पौलुस के साथ काम किया होगा। उसने यूओदिया और सुंतुखे सहित अपने साथ यीशु की

सेवा के लिए संघर्ष करने वाली स्त्रियों की सहायता किए जाने की अपील की (फिलिप्पियों 4:2, 3)। पौलुस ने नुमफास का उल्लेख (कई हस्तलिपियों में नुमफास पुरुष का नाम है) उसके रूप में किया, जिसने कलीसिया के इकट्ठा होने के लिए अपना घर दे दिया था (कुलुस्सियों 4:15)।

यदि पौलुस स्त्री-विरोधी था, जैसा कि कुछ लोग दावा करते हैं तो प्रभु की सेवा करते हुए उसने अपना नीच व्यवहार त्याग कर उनके साथ संगति की। उसने उन्हें निजी सलाम भी भेजे। उसे प्रभु द्वारा स्वीकृत स्त्रियों को उनकी सेवा से बाहर निकालने वाले के उदाहरण के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

मसीह के कार्य के लिए पौलुस के साथ काम करने वाली स्त्रियां साहसी और शक्तिशाली स्त्रियां थीं। उन्होंने सुसमाचार को फैलाने में पौलुस के साथ सेवा की। यह सच होने के बावजूद, यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए कि कलीसिया के काम और आराधना में उन्हें कोई अधिकार था।

सारांश

परमेश्वर का भय मानने वाली स्त्रियां नये नियम की कलीसिया में कई तरह से प्रसिद्ध थीं। आज की स्त्रियां अपने परिवारों और दूसरों की आवश्यकताओं को पूरा करने पर परमेश्वर की अमूल्य सेवक बनती हैं। वे सही समय और सही स्थान पर परमेश्वर का वचन सिखा सकती हैं, परन्तु उन्हें पुरुषों पर अधिकार की अनुमति नहीं दी गई है। घर में हो या धार्मिक मामलों में नेतृत्व का काम पुरुषों को ही सौंपा गया है। इस प्रकार से परमेश्वर ने स्त्रियों और पुरुषों की भूमिकाओं में अन्तर बरकरार रखा है।

क्या फीबे सेविका थी?

कुछ दायरों में इस तथ्य पर काफी कुछ किया गया है कि फीबे, जिसे पौलुस ने सलाम भेजा, को दास, मिनिस्टर या सेविका (deaconess) कहा गया है (रोमियों 16:1, 2)। कई लोग इस हवाले का इस्तेमाल इस प्रमाण के रूप में करते हैं कि स्त्रियों को आरम्भिक कलीसिया में अगुआई के पद दिए जाते थे। कुछ लोगों के अनुसार इस कथन पर बनाया गया मामला अपने आप में डावांडोल है। यदि आरम्भिक कलीसिया में ऐसा कोई पद था तो ''डीकनेस'' ही कलीसिया का एकमात्र पद है जिसके लिए बाइबल में किसी योग्यता का उल्लेख नहीं है। यदि फीबे ऐसे पद पर सेवा करती थी तो क्या इससे यह सिद्ध होता है कि उसे पुरुषों पर अधिकार था?

रोमियों 16 अध्याय यह स्पष्ट नहीं करता कि फीबे की सेवा कैसी थी। क्या वह दोरकास की तरह कपड़े सिलती थी या मण्डली में प्राचार करती थी? क्या वह कलीसिया को अपने घर बुलाती थी, जैसे निम्फा किया करती थी? क्या वह प्रिसकिल्ला अपने पति के साथ परिश्रम करती थी या वह गीत गाने में अगुआई करती थी? क्या वह स्त्रियों को

सिखाती थी या वह पुरुषों को सिखा सकती थी? क्या वह खाना तैयार करती और मण्डली के जरूरतमंदों की सेवा करती थी या वह यरूशलेम के साथ पुरुषों की तरह निर्धनों की परोपकारी सहायता के वितरण का निरीक्षण करती थी? क्या वह किसी ऐसी तरह सेवा करती थी, जिससे उसे पुरुषों पर अधिकार मिलता हो। उसकी सेवा के दायरों को समझने में सहायता के लिए हमें बाइबल के और वचनों की आवश्यकता है।

रोमियों 16:1 में फीबे के सम्बन्ध में इस्तेमाल किए गए शब्द *diakonos* का उद्देश्य[1] प्रबन्धकीय निगरानी या रखवाली करना नहीं है, क्योंकि यह ज़िम्मेदारी कलीसिया में प्राचीनों को दी गई थी (प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:1, 2); न इसमें मण्डली के लिए निर्णय लेने का विचार शामिल है। चरवाहे अर्थात परमेश्वर द्वारा ठहराए गए निरीक्षक (जिन्हें एल्डर, बिशप और पास्टर भी कहा जाता है) ने झुंड अर्थात कलीसिया की अगुआई करनी थी। चरवाहों के रूप में काम करते हुए उन्होंने भेड़ों के लिए निर्णय लेना और उनकी भलाई का प्रबन्ध करना था। चरवाहे भेड़ों के लिए निर्णय लेते और उनकी अगुआई करते हैं न कि उनसे निर्णय लेकर उनकी अगुआई में चलते हैं। उनके लिए प्रधान चरवाहे की इच्छा के अनुसार भेड़ों के जाने की दिशा चुनकर झुंड के आगे-आगे चलना आवश्यक है (1 पतरस 5:4)। यह ज़िम्मेदारी पुरुषों को दी गई थी, जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट है कि हर प्राचीन एक ही पत्नी का पति होना आवश्यक है (1 तीमुथियुस 3:2)।

नये नियम में ''प्राचीन,'' ''प्रेरितों'' तथा अन्य शब्दों के इस्तेमाल की तरह *diakonos* का इस्तेमाल तकनीकी और गैर-तकनीकी दोनों अर्थों में किया गया है। डीकन के पद के लिए इस शब्द का विशेष इस्तेमाल नये नियम में केवल तीन बार हुआ है (फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:8, 12)। अधिकतम इस प्रकार से इसका इस्तेमाल चार बार हुआ है, यदि पद का अर्थ रोमियों 16:1 वाला है; वरना सताइस बार यह आयत बनाती है कि इस शब्द का इस्तेमाल ''सेवा'' का अर्थ देने के लिए गैर-तकनीकी अर्थ में किया गया है। क्रिया रूप *diakoneo* जिसका अर्थ ''सेवा करना'' है, छत्तीस बार आता है, जिनमें से दो बार डीकन के पद के लिए लागू होता है। *Diakonos* के रूप में फीबे का हवाला यह सिद्ध नहीं करता कि पौलुस (इफीसियों 3:7; कुलुस्सियों 1:23, 25), तुखिकुस (इफीसियों 6:21; कुलुस्सियों 4:7), इपफ्रास (कुलुस्सियों 1:7) और तीमुथियुस (1 थिस्सलुनीकियों 3:2; 1 तीमुथियुस 4:6) यह उतना ही सिद्ध करता है कि वे डीकन थे, जितना *diakonos* फीबे के डीकनेस होने को सिद्ध करता है।

यह तथ्य कि *diakonos*, ''डीकनों'' का उल्लेख प्राचीनों या अध्यक्षों के पद के साथ हुआ है (फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:1, 8), का अर्थ यह होना चाहिए कि उनकी ज़िम्मेदारियां वैसी नहीं थीं, जैसी निरीक्षकों की। इस प्रकार इस शब्द के अर्थ ''किसी दूसरे के अधिकार के अधीन व्यक्तिगत सेवा'' से यह स्पष्ट होता है कि इस पद की ज़िम्मेदारी में उन्हें अध्यक्षों द्वारा दी गई सेवा को पूरा करना शामिल था। इस हैसियत में काम करने वालों की योग्यताओं (1 तीमथियुस 3:8-13) से संकेत मिलता है कि वे सम्मानीय, समर्पित और योग्य लोग होते थे।

मेज़ की सेवा के लिए चुने जाने वाले सात पुरुष (प्रेरितों 6:1-6) हो सकता है कि डीकन के ''पद'' पर न हों। *Diakonia* शब्द उनके काम का विवरण देता एक स्त्रीलिंग शब्द है जो उसी मूल से निकल हैं। यदि डीकन के पद की इच्छा की जाती थी तो *diakonos* जो पुलिंग शब्द है, इस्तेमाल किया जाता, जैसा कि पद का अर्थ देने के समय सब अन्य मामलों में होता है।

जब डीकन के पद के लिए *डायाकोनोस* शब्द का इस्तेमाल नहीं होता तो इसका अर्थ किसी दूसरे के अधिकार में रहकर सेवा करना है। इस कारण जब तक संदर्भ डीकन के पद के अर्थ की मांग न करे इसका इस्तेमाल गैर-तकनीकी अर्थ में माना जाना चाहिए।

फीबे के सम्बन्ध में रोमियों 16:1 में *डायाकोनोन* [1] में भी दिखने में ऐसी ही समस्या लगती है। हम संदर्भ से यह तय नहीं कर सकते कि इसका इस्तेमाल तकनीकी अर्थ में किया जा रहा था या गैर-तकनीकी अर्थ में। इस वचन में इसके इस्तेमाल का एक अनुमान दूसरे अनुमान जितना ही सही हो सकता है। कइयों का मानना है कि *prostatis* शब्द (रोमियों 16:2), जिसका अनुवाद ''उपकार'' (KJV) या ''सहायक'' (NASB) हुआ है, संकेत देता है कि वह किसी की निगरानी में सेवा करती थी। नये नियम में *prostatis* शब्द केवल यहीं आया है इसलिए हमें नये नियम में ऐसा कोई संदर्भ नहीं मिला, जिससे इस शब्द का अर्थ तय करने में सहायता मिले। सांसारिक इस्तेमाल अस्पष्ट है क्योंकि वहां इसका इस्तेमाल ''अधिकार चलाना'' या ''प्रबन्ध करना'' के लिए, पर अधिकतर ''संरक्षण'' और ''सेवा'' के लिए होता है। शायद यही कारण है कि *prostatis* का अनुवाद इस आयत में ''हाकिम'' या ''प्रबन्धक'' के बजाय किसी न किसी रूप में विश्व व्यापी तौर पर ''सहायक'' के तौर पर किया जाता है।

पौलुस ने लिखा कि फीबे *प्रोस्टेटिस* अर्थात ''बहुतों की वरन मेरी भी उपकार करने वाली'' थी (रोमियों 16:2)। यदि *प्रोस्टेटिस* का अर्थ ''हाकिम'' या ''गवर्नेस'' होती तो वह पौलुस के ऊपर अधिकारी होती, जो कुछ लोगों द्वारा निकाला जाने वाला निष्कर्ष है। ''संरक्षक सहायिका'' का अर्थ जो आमतौर पर इस शब्द में मिलता है, पौलुस और कई अन्यों के साथ उसके सम्बन्ध से अधिक मेल खाता है। यह सिद्ध करने का प्रमाण काफी नहीं है कि फीबे के पास कलीसिया में कोई पदवी थी। डाक्ट्रिन सम्बन्धी किसी मामले को किसी ऐसे वचन का इस्तेमाल करके सुलझाया नहीं जाना चाहिए, जिसमें उस बात को सिद्ध करने का पर्याप्त संदर्भ न हो।

क्या आप बाइबल का व्यापक संदर्भ फीबे की भूमिका निर्धारित करने में सहायता करता है? कई लोग यह सिद्ध करने के लिए कि आरम्भिक कलीसिया में डीकनेस की पदवि थी, 1 तीमुथियुस 3:11 का इस्तेमाल करते हैं। वे कहते हैं कि डीकनेस का पद था इसलिए फीबे के पास ऐसा पद अवश्य होगा। यह प्रमाण कि आरम्भिक कलीसिया में सेविकाएं या डीकनेसिस होती थीं, इस सम्भावना का द्वार खोल देता है कि वह एक डीकनेस थी, परन्तु इससे साकारात्क रूप से यह सिद्ध नहीं होगा कि वह डीकनेस थी। 1 तीमुथियुस 3:11 के सम्बन्ध में इतने सवाल खड़े हो जाते हैं कि इस आयत से कोई

स्पष्ट अर्थ नहीं निकाला जा सकता। *gune* शब्द जिसका अनुवाद ''पत्नियां'' या ''स्त्रियां'' हुआ है, डीकनों और/या एल्डरों की पत्नियों के लिए, या डीकनेसिस के लिए हो सकता है। यह तथ्य की डीकनेसिस के रूप में स्त्रियां आधिकारिक तौर पर सेवा करती थीं, नये नियम में और कहीं न मिलने के कारण हमें फीबे के डीकनेस होने और आरम्भिक कलीसिया में डीकनेस का पद होने से सम्बन्धित हठधर्मी से सावधना रहते हुए बचना चाहिए।

यदि हम यह साबित कर भी सकते कि डीकनेस का पद होता था, तो इससे यह सिद्ध नहीं होना था, कि आरम्भिक कलीसिया में स्त्रियां अध्यक्षों के रूप में सेवा करती थीं। ऐसे प्रमाण से यह पुष्टि नहीं होती कि स्त्रियां वे सभी काम करती थीं, जिनका कुछ लोग अनुमान लगाते हैं, कि वे करती थीं। न ही इससे स्त्रियों की भूमिकाओ के बारे में उन सब बातों का समर्थन होता, जिनकी आज कुछ लोग अनुमति दे रहे हैं। नये नियम में उपलब्ध हर जानकारी से यह संकेत मिलता है कि शब्द के अर्थ के अनुसार डीकन के पद में दूसरों द्वारा डीकनों को दिए गए कामों को पूरा करने की ज़िम्मेदारी थी। *डायाकोनोस* का इस्तेमाल यूहन्ना 2:5, 9 में मरियम द्वारा सेवकों को यीशु के निर्देशों को मानने की तरह उन सेवकों के लिए होता है, जो राजा की आज्ञाओं का पालन करते थे (मत्ती 22:13)। *डायाकोनोस* शब्द उन लोगों के लिए लागू होता है, जो परमेश्वर की इच्छा (रोमियों 13:4) के माध्यम के रूप में परमेश्वर की इच्छा मानने (यूहन्ना 12:26) और सरकारी अधिकारियों के लिए लागू होता है। इसका इस्तेमाल प्रेरितों के लिए भी किया जाता है जिन्होंने नई वाचा के सिखाने वाले के रूप में यीशु की इच्छा को पूरा किया (2 कुरिन्थियों 3:6; 6:4), झूठे शिक्षकों के लिए जो शैतान के दूत हैं (2 कुरिन्थियों 11:15), और पौलुस के लिए, जिसने वह संदेश बताया जो यीशु चाहता था कि वह बताए (1 कुरिन्थियों 3:5; 11:23; इफिसियों 3:7; कुलुस्सियों 1:23, 25)।

डायाकोनोस जिसमें किसी समय अधिकार वालों की आज्ञाएं होती थीं। वह आज्ञा देने या निर्णय लेने की स्थिति में नहीं थी। यदि फीबे डीकनेस थी तो किंखरिया की मण्डली में उसके पास अधिकार का कोई पद नहीं था। वह ''डीकनेस'' थी या नहीं, पर वह दूसरों के अधीन सेवा करने वाली समर्पित मसीही अवश्य थी, जो उनके निर्णयों को मानती थी।

टिप्पणी

[1]यूनानी शब्द *डायाकोनोस* जिसका अनुवाद ''सेविका'' हुआ है और यहां ''डीकनेस'' के रूप में इस्तेमाल किया गया है (रोमियों 16:1), मूल क्रिया *diakoneo* से लिया गया है। ''सेवा के लिए यह शब्द, *douleuo* (दास के रूप में सेवा करना), *therapeauo* (स्वेच्छा से सेवा करना) *latreuo* (वेतन के लिए सेवा करना) और *leitourgeo* (सरकारी सेवा करना) से भिन्न निजी सेवा का मूल भेद है।'' *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ दन्यू टैस्टामेंट,* संपा. गरहरड किट्टल एण्ड गरहरड फ्रेडरिक, अनु. व संक्षिप्तकर्त्ता ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 152 में एच. डब्ल्यू. बेयर, ''*diakonos.*''

बाइबल की प्रसिद्ध स्त्रियां

बाइबल में कई भली, महत्वपूर्ण और बद्धिमान स्त्रियों का उल्लेख है। अपने पति नाबाल के घृणित, नीच काम के विपरीत हम अबीगैल की बुद्धि और समझ के बारे में पढ़ते हैं (1 शमूएल 25:2-42)। दाऊद ने उसकी सराहना यह कहते हुए की, ''इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिस ने आज के दिन मुझ से भेंट करने केलिये तुझे भेजा है।और तेरा विवेक धन्य है, और तू आप भी धन्य है, कि तू ने मुझे आज के दिन खून करने और अपना पलटा आप लेने से रोक लिया है'' (आयतें 32, 33)। वचन में तामार की निष्कलंक शुद्धता और उसके भाई अमनोन की स्वार्थी लालसा को भी दिखाया गया है (2 शमूएल 13:1-19)। भली, समझदार स्त्री के साथ मूर्ख और अधर्मी आदमी में अन्तर बेहतर ढंग से कैसे दिखाया जा सकता है ?

जब योआब को अबशालोम की ओर से राजा दाऊद के सामने अपील करनी थी तो उसने पुरुष को नहीं बल्कि तकोआ की एक बुद्धिमान स्त्री को चुना (2 शमूएल 14:1-20)। इसी प्रकार सुलैमान की आरे से बात करने के लिए नातान ने बतशेबा को भेजा था (1 राजाओं 1:11-31)।

बाइबल में स्त्रियों के प्रभाव के अच्छे और बुरे दोनों परिणाम थे। यहोशेबा ने योआश को जो शाही वंश से था, दुष्ट अतल्याह से जो सिंहासन पर उसकी गद्दी के लिए खतरा बने सब सम्भावित वारिसों को मार डालने के लिए ढूंढ़ रही थी, से छिपाकर साहस दिखाया। उसने उसे और उसकी धायी को यहूदा में शासन करने के लिए उसके बड़ा होने तक बिछौने रखने की कोठरी में छिपाए रखा (2 राजाओं 11:1-3)। परमेश्वर ने सुन्दर और सामर्थी रानी एस्तेर का इस्तेमाल दुष्ट हामान द्वारा रची गई साजिश से इस्राएल को बचाने के लिए किया (एस्तेर 4-8)।

शिमशोन का पतन स्त्री के कारण ही हुआ था (न्यायियों 14-16)। सुलैमान की बुद्धि भी स्त्रियों कारण ही फिरी थी (1 राजाओं 11:1-4)। दाऊद बतशेबा की सुन्दर काया से ही भ्रमित होकर कामुक हुआ, जिस कारण उसने व्यभिचार और हत्या की (2 शमूएल 11:2-27)। इज़ेबेल ने अहाब की बर्बादी में सहायता की (1 राजाओं 21:1-26)।

एक अनाम स्त्री ने यरूशलेम में भेजे गए जासूसों की जान बचाई (2 शमूएल 17:17-21)। एक और बुद्धिमान और अनाम स्त्री ने योआब को नगर का विनाश करने से रोक लिया जब उसने वहां के लोगों को शेबा का सिर काटकर इसे शहरपनाह पर से योआब की ओर फैंक देने के लिए कहा (2 शमूएल 20:16-22)। इस प्रकार उसने दाऊद के विरुद्ध विद्रोह समाप्त करने में सहायता की।

दूसरों की सहायता करके कई स्त्रियां परमेश्वर की बड़ी सेवक रही हैं। एक स्त्री ने एलिय्याह को खाना खिलाया (1 राजाओं 17:9-15)। एक प्रसिद्ध स्त्री ने एलिशा को खाने के लिए भोजन और रहने के लिए कमरा दिया (2 राजाओं 4:8-10)। अपने संसाधनों से कई स्त्रियों ने यीशु और प्रेतिरों की आवश्यकताओं को पूरा किया (लूका 8:1-3; मत्ती 27:55;

मरकुस 15:41); उनमें मरियम और मारथा भी थी (लूका 10:38-42; यूहन्ना 12:2)। एक अनाम सामरी स्त्री ने याकूब के कुएं पर सच्ची आराधना का बड़ा सबक लिया और वह पूरे नगर को यीशु से सुनने के लिए उसके पास ले आई (यूहन्ना 4:21-42)। एक स्त्री ने यीशु की मृत्यु से पहले उसका अभिषेक किया (मत्ती 26:7-13)। यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के दौरान (यूहन्ना 19:25; लूका 23:49) उसकी माता सहित कई स्त्रियां साहस पूर्वक उसके पास रही जबकि उसके पुरुष अनुयायी उसे छोड़ गए। हथियारबंद भीड़ द्वारा यीशु को पकड़ने पर अपनी जान बचाने के लिए उसके चुने हुए प्रेरित भी भाग गए थे (मत्ती 26:56)।

ऐसी स्त्रियों जैसी जिनका उल्लेख ऊपर हुआ है भली और नेक स्त्रियों का विवरण नीतिवचन 31:10-31 में दिया गया है। ऐसे स्वभाव वाली स्त्रियां परमेश्वर की बड़ी सेविकाओं में रूप में सामने आईं। उन्होंने अपनी महानता सेवा में पाई न कि अधिकार जताने में। अपनी सेवा के द्वारा वे अधिकतर हाकिमों, राजाओं, राज्यपालों और राजकुमारों से ऊंची खड़ी रहीं। उन्हें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की श्रेणी में आने (मत्ती 11:11) और किसी हद तक यीशु की समानता पाने (मत्ती 20:28) के कारण महान लोगों में गिना जाना चाहिए (मत्ती 20:25-28)।

यदि पुरुष और स्त्रियां दोनों ही यीशु की शिक्षा का अभिप्राय समझ लें तो उन्हें समझ आ जाएगा कि सेवक होने का अर्थ वास्तव में प्रभु होने से नीचे जाना नहीं बल्कि एक कदम ऊपर आना है। इस सब का लक्ष्य एक उपयोगी सेवक के रूप में जीना होना चाहिए। बेशक कुछ लोगों की नज़र में बाइबल की स्त्रियां बाइबल में वर्णित हाकिमों और अगुओं जितनी महान न लगती हों पर उनकी महानता उनके भले कामों के परिणामों में देखी जा सकती है। काश, प्रभु हमें ऐसी कई और महान स्त्रियां दें।

यीशु की माता मरियम महान स्त्री का एक उदाहरण है। वह अपने आप को परमेश्वर की विनम्र सेवा के लिए देने को तैयार थी। जब स्वर्गदूत ने घोषणा की कि उसका शरीर वह माध्यम बनेगा, जिसके द्वारा मसीह आएगा तो उसने दीनता पूर्वक उत्तर दिया, ''देख, मैं प्रभु की दासी हूं, तुझे तेरे वचन के अनुसार हो: तब स्वर्गदूत उसके पास से चला गया'' (लूका 1:38)

अपने बचपन में यीशु ने इस स्त्री अर्थात अपनी माता की आज्ञा मानता था: वह युसूफ के साथ-साथ मरियम क भी अधीन था। ''तब वह उन के साथ गया, और नासरत में आया, और उस के वश में रहा; ...'' (लूका 2:51)। वह अपनी समझ, योग्यता या किसी और क्षमा के कारण जो उनमें नहीं थी, उनके अधीन नहीं रहा था। वह उसके माता और पिता के रूप में उस पर अधिकार की उनकी स्थिति के कारण उनके वश में रहा था।

जीवन में लगभग अठारह वर्ष बाद उसने अधिकार की अपनी स्थिति में कदम रखा और अपनी माता की स्वीकृति से अगुआई की भूमिका ली। काना में होने वाले विवाह भोज में मरियम ने यीशु को बताया कि उनके पास दाखरस खत्म हो गया है। उसने उत्तर दिया, ''हे महिला तुझे मुझ से क्या काम? मेरा समय अभी नहीं आया है'' (यूहन्ना 2:4; NKJV)। फिर उसने सेवकों से यह कहकर कि ''जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना'' (यूहन्ना 2:5) समस्या का समाधान यीशु के हाथों में दे दिया। उसके बाद से यीशु ने अपनी माता

के साथ सम्बन्ध में अधिकार की अपनी स्थिति बनाए रखी।

प्रभु की महान दासी के रूप में मरियम पर विचार करते हुए हमें इस तथ्य को नहीं भूलना चाहिए कि बेशक हमारा उद्धारकर्त्ता उसकी देह अर्थात स्त्री की देह के द्वारा संसार में आया (गलातियों 4:4) पर उसने एक पुरुष की देह धारण की। परमेश्वर मनुष्य नहीं है, पर उसने मनुष्य की देह अर्थात यीशु की देह को पृथ्वी के लोगों पर स्वयं को प्रकट करने (यूहन्ना 1:18) और संसार के पापों के लिए बलिदान उपलब्ध कराने (इब्रानियों 10:5, 10) के लिए चुना।